Date of Publication: 25 November 2015

कमल ज्योति

(मासिक पत्र)

वर्ष-9, अंक-7 दिसम्बर 2015 विक्रमी संवत् 2072 सृष्टि संवत् 1960853113 एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये सहयोग राशि 1100/-रुपये

ओ३म्

संस्थापक

स्व. श्री भजनप्रकाश आर्य जी

स्व. श्री ओम प्रकाश हसीजा

संरक्षक

नरेन्द्र आर्य 'सुमन'

चलभाषः 9213402628

प्रधान सम्पादक

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

चलभाष : 9810084806

सम्पादक

आचार्य शिव नारायण शास्त्री

अतुल आर्य

चलभाष : 9718194653

दूरभाष : 011-27017780

सहयोगी सम्पादक

प्रिंसीपल हर्ष आर्या

चलभाष : 9999114012

राजीव आर्य

चलभाष : 9212209044

अपने-अपने आपको जानें

अयं कविरकविषु प्रचेता मर्त्तेष्वग्निरमृतो नि धायि।
स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः सदा त्वे सुमनसः स्याम॥

- ऋक. 7.4.4.

ऋषिः-**वसिष्ठ**॥ देवता-**अग्निः**॥ छन्दः-**त्रिष्टुप्**॥

शब्दार्थ-अयम्=यह **प्रचेगाः अग्निः**=चेतन अग्नि **अकविषु कविः**=इन अकवियों में कवि होकर **अमर्त्येषु अमृतः**=इन मरनेवालों में अमृत होकर **निधायि**=निहित है, रखा हुआ है। **सहस्वः**=हे बल-तेज-शक्तिवाले **सः**=वह तू **नः**=हमें **अन्न**=इस संसार में **मा**=कभी मत **जुहुरः**=विनष्ठ कर, किन्तु हम **सदा**=सदा **त्वे**=तुझमें **सुमनसः**=अच्छे मनवाले, प्रसन्नता पानेवाले **स्याम**=बने रहें।

विनय- हम क्या हैं? यह हम नहीं जानते। हम जिसे 'हम' समझते हैं वह तो केवल बहुत सी विनश्वर वस्तुओं का ढेर है। फिर भी जो हममें ज्ञान, चैतन्य, शक्ति और आनन्द दिखाई देता है वह जिस एक वस्तु के कारण है वही हमारे अन्दर एकमात्र अविनश्वर तत्त्व है। यह हमारा अग्नि है, आत्मा है और वही असली हम हैं। इन हमारे देह-इन्द्रिय आदि भौतिक जड़ वस्तुओं में वही एकमात्र (प्रचेता) है, चेतन है। इन अकवियों में वह कवि है, इन अक्रान्तदर्शियों में वह क्रान्तदर्शी है, इन बोल न सकनेवालों में बोलने की शक्ति देनेवाला है, इन असुन्दर, अकाव्यमय वस्तुओं में वह सुन्दर काव्यमय है। वही इन विनाशशील, मरनेवाले मर्त्य अग्नियों में एक अविनश्वर अमृत अग्नि है। वही असली हम हैं, आत्मा हैं।

ओह! इसकी उपेक्षा कर जो अब तक हम दिन-रात दूसरी जड़, क्षणभंगर वस्तुओं की सेवा-शुश्रूषा करने में लगे रहे हैं यह हमने कितना अनर्थ किया है! हे आत्मन्! आज तुझे पहचानकर हम देखते हैं कि इन्द्रिय, मन, प्राण आदि में जो बल, तेल, सामर्थ्य दिखाई देता है वह इनमें नहीं है, वह सब तो तुझमें है, इसलिए हे अग्ने! सहस्वः! हे बल, तेज, शक्ति के भण्डार! तू इस संसार में हमारा कभी विनाश मत कर। हमने अबतक बेशक तुझ अपनी अग्नि को भूलकर बड़ा आत्मघात किया है, पर अब हम कभी ऐसा आत्मघात न करेंगे। हमें अब एकमात्र तेरी ही प्रसन्नता चाहिए। यह सब जग बेशक रूठ जाए, पर हम अब तुझे कभी रूठने न देंगे। हे अन्दर बैठे अन्तरात्मन्! जबतक हमारे प्रति तुम सुमना हो, चाहे फिर दुनियावाले हमारी निन्दा करें, धिक्कारें, हमें कुछ परवाह नहीं इस सब मर्त्य दुनिया को छोड़कर हम केवल तुझे प्रसन्न रखेंगे। चूँकि तू ही सब-कुछ है, निश्यच से हमारा सब-कुछ है।

गतांक से आगे

सामवेद संहिता

–श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा

इनो राजन्नरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमाँ अदर्शि।
चिकिद्वि भाति भासा बृहतासिक्नीमेति रूशतीमपाजन्।।
कृष्णां यदेनीमभि वर्पसाजूञ्जनयन्योषां बृहतः पितुर्जाम्।
ऊर्ध्व भानुं सूर्यस्य स्तभायन् दिवो वसुभिररतिर्वि भाति।।
भद्रो भद्रया सचमान आगात् दिवो वसुभिररतिवि भांति।।
भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात्।
सुप्रकेतैघु भिरग्निर्वितिष्ठन् रूशभ्डिर्वणेरभि राममस्थात्।।925।।

सूर्य भी है अग्नि रूप, चक्र घुमा शोभा देता।
ज्योति से भयानक कृष्णा निशा में लाली भर देता।।
सूर्य जनक ने उषा पुत्री, को जब भय में प्रकटाया।
काली रात हटा अग्नि ने, प्रकाशपुञ्ज का चक्र चलाया।।
यह अग्नि द्युलोक ढांप, प्रकाश रवि का थाम लेता।
तेजधारी यही अग्नि, सूर्य बनकर काम देता।।
निशानाशिनी उषा के पीछे, सूर्य भागतां शोभा पाता।
परिचित सुन्दर आलोकों से, चमक चमक अंधकार नशाता।।

कया ते अग्ने श्रंगिर ऊर्जो नादुपस्तुतिम्। वराय देव मन्यवे।।
दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो। कद् वोच इदं नमः।।
अधा त्वं हि नस्करो विश्वा अस्मभ्यं सुक्षितीः।
वाजद्रविणासो गिरः ।।926।।

अंग-अंग में रमे हुए, अग्ने हम तुम को वरते हैं।
उस वाणी से तुम्हें बुलायें, जिसमें मन्यु भरते हैं।।
वही शक्तिशाली अग्नि, पाप से हमें बचाते हैं।
किस वस्तु का दान करें, जिससे शीस झुकाते हैं।।

अग्न आ याह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे।
आ त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे।।
अच्छा हि त्वा सहसः सूनो अडिरः स्रु चश्चरन्त्यध्वरे।
ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहोऽग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम्।।927।।

हे अग्ने तू आ जा अपनी, दीप्ति शक्ति को साथ लिये।
तुझे बुलाते त्यागभाव से, यज्ञ-कार्य को हाथ लिये।।
यजनशील, पूजनीय को, हृदय आसन पर बिठलायें।
जानें तुझ को बुद्धि से, तेरे गुण सब और फैलायें।।
हे बलदाता अंग-अंग में, तेरी शक्ति भर जाये।
जीवन-यज्ञ में ज्ञान-घृत से ही यज्ञ कर पायें।।
तुझ को लखकर मेरे अंग, साथ हव्यों से यज्ञ रचायें।
यज्ञ अग्नि में स्रुवा लिये, गतिशील बनें तुझे बढ़ायें।।
तू बल को है सच्चा करता, तुझे ज्ञान से सभी जगाते।
तू संकल्प की उत्तम अग्नि, तुझे कामना से ध्याते।।

अच्छा नः शीरशोचिषं गिरो यन्तु दशतम्।
अच्छा यज्ञासो नमसा पुरुवसुं पुरुप्रशस्तमूतये।।
अग्नि सूनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम्।
द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्वा होता मन्द्रतमो विशि ।।928।।

गीत गायें उस अग्नि के, जो मार्ग दिखाने वाला है।
शांत ज्योति को नमस्कार करें, जो सबका बसानेवाला है।।
उसका लेकर आसरा हम, यज्ञीाव से बढ़ते जायें।
उसी अग्नि को नमन करें, और उसी के गीत गायें।।
सहनशक्ति को दर्शाता, सब चीजों का ज्ञान कराता।
उसी अग्नि के पास जाओ, श्रेष्ठ पदार्थ जो हमें दिलाता।।
अमर बना जो सब जीवों में, दो रूपों में अपना ज्ञान करे।
उत्तम सुख का देने वाला,दिव्य गुणों का दान करे।।

श्रदाभ्यः पुर एता विशामग्निर्मानुषीणाम् तूर्णी रथः सदा नवः।।
अभि प्रयांसि वाहसा दाश्वाँ अश्नोति मर्त्यः।
क्षयं पावकशोचिषः।।
साह्वान् विश्वा अभियुजः क्रतुर्देवानीमसृक्तः।
अग्निस्तुविश्वस्तमः ।।929।।

आगे चलने वाला अग्नि, बनता जीवन का नेता।
शीघ्रगामी रथ की न्याई, यात्रा में है सुख देता।।
झुक-झुक चलता साधक, सुख से ज्ञान वास को पाता।
नीचे-नीचे जो चलता है, वही सबसे ऊँचा जाता।।
सारे दुर्भावों का जेता, दिव्य गुणों से भर दे मन।
ज्ञान-धन से धनी बना, ज्ञान-प्रभा से चमका दे तन।।

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्र रातिः सुभग भद्रो अध्वरः।
भद्रा उत प्रशस्तयः।।
भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये येना समत्सु सासहिः।
अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धतां वनेमा ते अभिष्टये ।।930।।

उपासित अग्नि दानभाव से, जग क ही कलयाणा करे।
शुभ ही प्रगति पथ भी, सुखकारी हमारे गा करें।।
हमो शुभ संकल्प बनाओ, विघ्नों को मार भगायें।
संघर्षो में विजयी बन, शत्रु भावों को दूर हटायें।।
इष्ट प्राप्ति हित भजें तुम्हें, दुःखसागर से तर जायें।
पाप पंक को पार करें, दुष्ट भाव हमसे डर पायें।।

अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो।
अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः।।
स इधानो वसुष्कविरग्निरीडेन्यो गिरा।
रेवदस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि।।
क्षपो राजन्नुत त्मनाग्ने वस्तोरूतोषसः।
स तिग्मजम्भ रक्षसो वह प्रति ।।931।।

हे अग्ने तुम हो बलशाली, ज्ञान धनों के भी स्वामी।
सब के ज्ञाता सबके शासक, दो आत्मज्ञान है अन्तर्यामी।।
मेरी वाणी तेरे गुण गाए, हे क्रांतिकारी बसाने वाले।
मेरा ज्ञान बढ़ता ही जाए, ज्ञान-प्रभा चमकाने वाले।।
हे चमकीले सबके शासक, निज तीक्ष्णा ज्योति दिखाता जा।
अनुपम तेज दिखा निश दिन, सब शत्रु भाव जलाता जा।।

[क्रमशः]

गतांक से आगे

चिन्ता से चिन्तन और चिन्तन से चिरन्तन की ओर

–आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

पादरी ने कहा–इस चित्र में सुधार करो, कुल्हाड़ा हटाकर उसके स्थान पर चाबी भर मौत के हाथ में थमा दो। चित्रकार ने पादरी से पूछा–इसका क्या रहस्य है? संत आगस्तीन ने जवाब दिया कि मृत्यु किसी को नष्ट नहीं करती अपितु परिवर्तन का एक उपयोगी द्वार भर खोलती है। कहा भी है–

हुआ संयोग सभी सुख पाये, होय वियोग क्या रोना।
जितनी चाबी भरी राम ने, उतना चला खिलौना।
प्रारब्ध जैसी जीवों की, वैसी भर दी चाबी।
मेरे प्रभु की न्याय-तुला में, कोई नहीं खराबी।
सम्भलो! आगे सत्कर्म करो, कोई दुष्कर्म करो ना॥
जितनी चाबी........................।

आता-जाता जीव अकेला, संग न कोई जाये।
यज्ञ, दान, पुण्य धर्म किया जो, वह ही साथ निभाये।
शुद्ध आचार-विचार से बन्दे, बीज धर्म के बोना।
जितनी चाबी........................।

ओ३म् है रक्षक पालक जग का, ओ३म् सुख शान्ति दाता।
जन्म-जन्म का नाता इससे, यही सखा बन्धु पितुमाता।
योगी जनों का ओम् ओढ़ना, ओ३म् ही बना बिछोना।
ईश्वर इच्छा मानो, मन में शोक के भाव भरो ना॥
जितनी चाबी........................।

कर्मफल टारै नहीं टरै

किये हुए कर्मों का फल मिलता है।

शुभ कर्मों का फल शुभ होता है और दुष्कर्मों का फल दुःख होता है।

नाभुक्तं श्रीयते कर्म-जब तक किये हुए कर्मों का फल भोग न लिया जाये, तब तक कर्म नष्ट नहीं होता है।

जगत् में दो प्रकार की योनियाँ है। कितना प्यारा शब्द है *जगत्। (जगत् को) समझ लें तो फिर दुःख कहाँ?* वेदों में भी जगत् शब्द आया है।

जैसे-**ईशावास्यमिदं सर्वम् यत्किञ्च जगत्यां जगत्।**

जगत् का अर्थ है-ज=जन्म लेना। गत=चले जाना शब्द ही बताता है कि यह संसार क्या है, आना और जाना ही तो जगत्।

इस संसार में दो प्रकार की योनियाँ हैं-1. कर्मयोनि 2. भोगयोनि।

मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है। परन्तु फल पाने में परतन्त्र है। वह जहाँ जाये, कुछ भी खाये, जहाँ विचरे। वह स्वतन्त्र है।

जैसे विद्यार्थी 11 महीने तक परिश्रम करता है, लगन से अध्ययन करता है। परीक्षा हाल में प्रश्नोत्तर लिखा है। तब भी वह स्वतन्त्र है। उस समय गलत उत्तर भी लिख रहा होता है तो कोई नहीं टोकता। परन्तु उत्तर पुस्तिका चेक होती है। सही उत्तर का सही परिणाम और गलत उत्तर हो तो उसे अनुत्तीर्ण घोषित कर दिया जाता है।

यहाँ पर विद्यार्थी परीक्षा देने में स्वतन्त्र हैं, परन्तु फल पाने में परतन्त्र है।

ठीक इसी प्रकार जीवात्मा जी जीवनभर कर्म करने में स्वतन्त्र है, परन्तु फल पाने में पराधीन है।

माताओं, पुत्रियों और सज्जनों! कर्मफल तो मिलता ही है, हाँ, परिणाम में भले ही देर हो, परन्तु मिलता जरूर है।

जैसे कोई केले को खाये तो पचने में छह घंटे का समय लग जाता है। यदि कोई जहर पी ले तो मरने में मिनट का भी समय नहीं लगता।

मनु कहते हैं-

मानसं मनसैवायमुपभुक्ते शुभाशुभम्।
वाचा वाचाकृतं कर्म कायेनैव च कायिकम्॥

– मनु. 12 अध्याय 6 श्लोक

(अयम्) यह जीव (मानसं शुभ+अशुभं कर्म मनसा+एव) मन से जिस शुभ वा अशुभ कर्म को करता है उसको मन, (वाचाकृतं वाचा) वाणी से किये को वाणी, (च कायिकं कायेन+एव) और शरीर से किये को शरीर से (उभभुक्ते) सुख दुःख भोगता है।

शरीरजैः कर्मदोषैर्याति स्वावरतां नरः।
वाचिकैः पक्षिमृगतां मानसैरन्त्यजातिताम्॥

(नरः) जो नर (शरीरजैः कर्मदोषैः स्थावरतां याति) शरीर से चोरी परस्त्रीगमन, श्रेष्ठों को मारने आदि दुष्टकर्म करता है, उसको वृक्ष आदि स्थावर का जन्म, (वाचिकैः पक्षिमृगताम्) वाणी से किये पापकर्मों से पक्षी और मृग आदि तथा (मानसैः अन्त्यजातिताम्) मन से किये दुष्टकर्मों से चण्डाल आदि का शरीर मिलता है।

जिस आदमी का पाप-पुण्य बराबर होते हैं, वे मनुष्य जन्म को प्राप्त करते हैं। भगवान् ने मनुष्य के सिर को सीधा रखा। पाप बढ़ा, पुण्य कम, तो भगवान् ने सिर को नीचे झुकाया, जैसे घोड़े आदि के सिर है। ये योनियाँ प्राप्त होती हैं।

सुविधायें ही नहीं संस्कार भी आवश्यक

वेदों में माँ का स्थान प्रथम शिक्षक के रूप में बताया गया है ''आचार्य देवो भव'' से पूर्व ''मातृ देवो भव'' की घोषणा की गई है।

अगर हम अपने जीवन में देखें अथवा इतिहास को देखें तो हम पायेंगे कि आचार्य कुल में जाने से पूर्व, गर्भस्थ शिशु को माँ ही आचार्य अथवा शिक्षक का कार्य करती है। बच्चा जन्म लेते ही रोना माँ के गर्भ से जन्म पूर्व ही सीख लेता है और बिना सिखाये पहला शब्द माँ ही पुकारता है। अगर हम इतिहास की ओर देखें तो महाभारत में अभिमन्यु अपनी माँ के गर्भ से ही युद्ध नीति के अनुसार चक्रव्यूह में घुसना सीख गया था। इसका तात्पर्य यह हुआ कि माँ के दिल से बच्चे की सांसें जुड़ी होती हैं और बच्चा गर्भ से ही संस्कार लेना प्रारम्भ कर देता है। शिवाजी की माँ जीजीबाई ने अपने पति से पूछा कि आपको कैसा बालक चाहिए तो उन्होंने कहा कि मुझे वीर प्रतापी कई गुणों और कलाओं से पूर्ण बालक चाहिए। जीजाबाई ने गर्भ धारण करने के उपरान्त पूर्ण रूपेण वैदिक संस्कार के अनुसार सभी संस्कार पूर्ण किये और वीर शास्त्रों का अध्ययन करती रही। इसी कारण उसने भारत माँ के महान सपूत शिवाजी को जन्म दिया। बच्चों को संस्कारित करना माँ का ही कर्तव्य बनता है।

बच्चों को सुविधायें देना आवश्यक है लेकिन केवल सुविधायें देना हानिकारक सिद्ध हो रहा है। आजकल अधिकांश परिवारों में एक भयंकर चूक हो रही है कि माता पिता अपने बच्चों को अधिक से अधिक सुविधायें तो दे रहे हैं परन्तु संस्कारों के नाम पर कुछ खास नहीं दे पा रहे हैं। यही कारण है कि बच्चे एवं युवक नहीं समझ पा रहे हैं कि अपने माता-पिता, बहन-भाई, परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति क्या कर्तव्य है। बच्चे माता-पिता, समाज और देश से केवल सुविधायें चाहते हैं। इन सबके प्रति बच्चों का क्या कर्तव्य है, यह नई पीढ़ी के सोच के दायरे से बाहर होता जा रहा है।

अगर हम अपने अन्दर झांक कर देखें तो क्या हमने अपने बच्चों को आर्य मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगीराज श्रीकृष्ण, स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द, महाराणा प्रताप, शिवाजी और झांसी की रानी के विषय में बताया है कि इन सभी महापुरुषों एवं वीरों ने अपने जीवन में किस प्रकार समाज और राष्ट्र की सेवा की, या कभी भारतीय संस्कृति एवं लोक व्यवहार के महत्व को बताया? मन की गहराईयों से कृपया इस विषय पर विचार कर स्वयं अपना आकलन करें। आप कभी विचार करें कि आपका बालक अथवा बालिका, आपके पास, आपके परिवार की ही नहीं राष्ट्र की भी धरोहर है। आपने कभी यह अनुभव किया कि राष्ट्र के भावी भविष्य के निर्माता आपकी गोद में पल रहे हैं। स्मरण रहे कि आप ही बच्चों की प्रथम आचार्या हैं यदि माँ चाहे तो आप देश को शिवाजी, गांधी, विवेकानन्द, दयानन्द एवं श्रद्धानन्द जैसे समाज सेवी दे सकती हैं। आज युवाओं में गुण्डागर्दी, बलात्कार, चोरी, डकैती, नशे की आदत, पाश्चात्य सभ्यता का बढ़ता स्वरूप, यह सभी शब्द उपज हैं संस्कार न देने के कारण ही।

अगर हम यह मानते हैं कि संस्कार बच्चे को गर्भ से ही प्राप्त होने लग जाते हैं तो आज की गर्भवती माँ दूरदर्शन द्वारा प्रसारित 'सास भी कभी बहू थी' एवं अन्य इसी प्रकार के कार्यक्रमों जिनमें पारिवारिक लड़ाई झगड़े, क्लेश विवाद, खून खराबा, साजिशें करना आदि क्यों देख रहे हैं। स्मरण रहे कि आपके होने वाले शिशु पर इस सबका प्रभाव पड़ रहा है। बच्चों को संस्कारित करने के लिये आपको स्वयं भी संस्कारित होना होगा एवं संयम में रहते हुए त्याग भी करना होगा। माँ त्याग का एक दूसरा रूप होती है। आपको इस कलयुग में ऐसे कई पिता मिल जायेंगे कि जिसका बच्चा भूखा हो और वह शराब पी रहा हो लेकिन ऐसी माँ नहीं मिलेगी जिसका बच्चा भूखा हो और वह स्वयं भोजन करे। वह भूखी रहकर त्याग करके बच्चों को भोजन अवश्य करायेंगी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि माँ जैसा समर्पण कोई नहीं कर सकता। इसलिये बच्चों को सुविधाओं का इतना आदी न बनायें कि वह आपके द्वारा दिये जाने वाले संस्कारों को भी न समझ पाये। पश्चिम की तर्ज पर आज भारत में भी स्थान-स्थान पर वृद्धाश्रम स्थापित हो रहे हैं। इसका मुख्य कारण ही बच्चों का संस्कारित न होना है। इसलिये समय रहते इस महत्वपूर्ण दृष्टिकोण को समझने और बच्चों को धार्मिकता एवं राष्ट्रीयता घुट्टी के रूप में देने हेतु आर्य वीर दल और आर्यसमाज में भेजें। यही शाश्वत संस्थायें हैं जो राष्ट्र और समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

इतिहास साक्षी है कि आर्य समाज ने राष्ट्र को ही नहीं अपितु विश्व को भी कई महान् विभूतियां दी हैं। लाला लाजपत राय, भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द, वर्तमान में योगिराज स्वामी रामदेव, पहला भारतीय अन्तरिक्ष यात्री राकेश शर्मा, विश्व के सबसे अधिक मोटर साईकिल एवं साईकिल बनाने वाले उद्यमी महात्मा सत्यानन्द मुंजाल एवं बृजमोहन मुंजाल, विश्वप्रसिद्ध मसाला उद्योगपति महाशय धर्मपाल जी, यह सभी आर्य संस्कारों की ही उपज हैं। हमें गर्व है कि इन सभी महानुभावों ने सन्देश दिया कि आओ वैदिक मान्यताओं से जुड़ो और बच्चों को इससे जोड़ो। किसी कवि ने शब्दों को कुछ इस प्रकार से संजोया है :

''भरोसा कर तू 'आर्य समाज' पर तुझे धोखा नहीं होगा।''

- साभार टंकारा समाचार

CONQUER YOUR BAD HABITS

A wealthy man requested an old scholar to wean his son away from his bad habits.

The scholar took the youth for a stroll through a garden. Stopping suddenly he asked the boy to pull out a tiny plant growing there. The youth held the plant between his thumb and forefinger and pulled it out.

The old man then asked him to pull out a slightly bigger plant. The youth pulled hard and the plant came out, roots and all.

"Now pull out that one." said the old man pointing to a bush. The boy had to use all his strength to pull it out.

"Now take this one out, "said the old man, indicating a guava tree. The youth grasped the trunk and tried to pull it out. But it would not budge.

"I It`s impossible," said the boy, painting with the *effort.*

"So it is with bad habits," said the sage, "When they are young it is easy to pull them out but when they take hold they cannot be uprooted.

The session with the old man changed the boy`s life.

Moral: Habits form character and character is destiny.

We sow our thoughts and reap our actions: we sow our actions and reap our habits; we sow our habits and reap our characters: we sow our character and reap our destiny. Thus, first we form habits, and then habits form us.

Bad habits are like a comfortable bed, easy to get into, but hard to get our of. It is easier to prevent bad habits than to break them.

There is an old saying that, one can`t kill a frog by dropping him into hot water. As we drop him into the hot water, he reacts so quickly that he immediately jumps out unharmed. But if we put him in cold water and gradually warm it up until it is scalding hot, we have him cooked before he knows it. The encroachment of bad habits in our lives is very much like this.

The chains of bad habits are generally too small to be felt until they are too strong to be broken.

Conquer your bad habits soon or very soon they will conquer you!

सत्संग का फल

–श्रीमती सुकांती दयानन्द दयानन्द परिसर आर्य नगर दुर्ग

एक चोर जब मरने लगा तो अपने पुत्र को सांसारिक व्यवहार की सब शिक्षा देने के उपरांत यह भी नसीहत दी कि बेटा भूल कर भी कभी पंडितों का उपदेश व कथा मत सुनना। यदि कथा के मार्ग से ही जाना पड़े तो कानों में अंगुली देकर चले जाना। बाप के मरने के बाद इस नये चोर ने भी अपने काम में खूब सफाई के हाथ दिखाने शुरु किये। रोज कहीं न कहीं हाथ मारता। एक दिन चोरी करके उसे एक ऐसे मार्ग से जाना पड़ा कि जहाँ कथा हो रही थी। इस चोर ने अपने उस्ताद की बात याद करके कानों में अंगुली लगा दौड़ना शुरु किया, परन्तु ठोकर जो लगी तो मुँह के बल भूमि में जा गिरा। अंगुलियाँ कानों में से निकल गयी और पंडित के यह शब्द कि देवता की परछाई नहीं होती उसके कान में पड़ गये कुछ दिन के बाद उस चोर ने एक बड़ी चोरी की। उसका भेद निकालने को एक पुलिस वाले ने काली जी का रूप धरण करके चोर के मकान पर आधी रात में आवाज दी। चोर निकल कर आया देवी को प्रणाम कर बोला क्या आज्ञा है, देवी रूप धारी पुलिसवाला बोला कि तूने अभी इतनी बड़ी चोरी की है किन्तु फिर भी मेरे लिए भेंट पूरी क्यों नहीं दी? चोर अपनी चोरी के बावत् कुछ कहने ही वाला था, कि उसकी निगाह परछाई पर पड़ी और उसने कथा की बात का स्मरण करके कहा कि तू कैसी भेंट मांगती है। मैंने चोरी कब की है। इस पर नकली देवी ने डाटकर कहा कि क्यों मुझसे झूठ बोलता है। देवता से भेद छिपाता है। चोर ने कहा मैं तो सच कहता हूँ। देवता ही झूठ बोलने लगे तो फिर क्या ठीक है। मैंने कभी भी चोरी नहीं की आप मुझे झूठा दोष लगाती हैं। इस पर पुलिसवाले ने चोर को सच्चा समझ छोड़ दिया और चल दिया, चोर भी घर में आकर बड़ा प्रसन्न हुआ, और मन में कहने लगा कि यदि इसकी परछाई न दिखती तो मैं अवश्य ही इसे देवी समझकर सारा हाल बता देता अच्छा हुआ कि मुझे नकली काली को देख कथा की बात याद आ गयी। बस उस दिन से चोर नित्य प्रति कथा में जाने लगा और यहां तक कि सत्संग के प्रभाव से उसने चोरी का पेशा छोड़कर दुकान पर काम करना आरंभ कर दिया। इसलिए तुलसी दास जी ने बड़ी महत्वपूर्ण बात कही। **एक घड़ी आधी घड़ी आधी ते पुनि आध। तुलसी संगत साधु की हरे कोटी अपराध** । इस संबंध में प्रखर मनीषी महाराज भर्तुहरि जी ने बड़ा भावपूर्ण परामर्श अपनी अमर कृति नीति शतक के अन्दर निम्न श्लोक के माध्यम से दिया है।

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्।
मानोन्नतिं दिशति पाप-मपा-करोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
सत्संगः कथय किन्नकरोति पुंसाम्॥

शिक्षा– सत्संगति से ज्ञान बढ़ता है, आचरण सुधरते हैं, सत्संग करते रहो।

ऋषि का क्रांतिकारी चिंतन लाजवाब था

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

मैंने और आपने भारतीय नवजागरण के सूत्रधार महर्षि दयानन्द के जीवन और कृतित्व का अध्ययन करते समय उनके जिन विचारों और कार्यो से परिचय प्राप्त किया, उनमें आस्तिकता, ईश्वर भक्ति, वैदिक शास्त्रों तथा ऋषिकृत गंथों की सर्वोपरि मान्यता, देशभक्ति, गौसेवा, संस्कृत तथा हिन्दी का प्रचार, समाज सुधार, नारी उत्थान, दलित जातियों की सेवा तथा उनकी अधिकार रक्षा आदि प्रमुख हैं। किन्तु दयानन्द का क्रांतिकारी चिंतन यहीं तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने भारतवासियों को विचार चिंतन के कुछ ऐसे सूत्र सौंपे हैं जो उनके समकालीन तथा बाद के धर्माचार्यो, राष्ट्रकर्मियो तथा समाज सुधारकों में नदारद थे। यहां इस दयानन्दीय चिंतन के कुछ ऐसे ही मौलिक तथा दुर्लभ विचार बिन्दुओं की चर्चा करेंगे।

प्रथम सूत्र-परंपरा और प्रगति को साथ लेकर चलना: स्वामी दयानन्द के क्रांतिकारी चिंतन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे उपयोगी तथा गतिमान प्राचीन परम्पराओं के समर्थक होने के साथ-साथ नये प्रगतिशील विचारों और कार्यक्रमों को स्वीकार करने के सदा पक्ष में रहे। इसके विपरीत हम देखते हैं कि उनके समकालीन तथा बाद के कुछ महापुरुष कतिपय हानिकर रूढ़ियों तथा मूढ़ता पूर्ण परम्पराओं से चिपके रहना उचित समझते थे। उदाहरण के लिए, रामकृष्ण परमहंस के लिए समाज सुधार का कोई महत्व नहीं था। वे धार्मिक रूढ़ियों तथा कदाचारों का सक्रिय विरोध करने में नितांत अक्षम थे। प्रगतिशीलता का दावा पेश करने वाले स्वामी विवेकानन्द समाज सुधार के कार्यो का विरोध करते रहे। प्रखर राष्ट्रवाद का उन्होंने कभी समर्थन नहीं किया। समाज सुधार के कार्यक्रमों को तीव्रता से लागू करने के वे हक में नहीं थे। बाल विवाह का समर्थन तथा विधवा विवाह का विरोध करने में मुखर रहे। उनके परवर्ती लोकमान्य तिलक राजनीति में निश्चय ही उग्रवादी विचारधारा के समर्थक थे किन्तु समाज सुधार में वे सदा प्रतिगामी रहे। उन्होंने ऋषि दयानन्द के शिष्य महादेव गोविन्द रानाडे द्वारा संचालित सोशल कांफ्रेंस के कार्यक्रमों और उद्देश्यों का प्रबल विरोध किया। उनका यह कहना था कि विदेशी सरकार द्वारा किये गये समाज सुधार के कार्य हमें स्वीकार नहीं हैं। इसी रूढ़िवादी दृष्टि के कारण वे 'एज ऑफ कंसेंट बिल' के विरोध में उतर आए। यह कानून उन अल्पवयस्क स्त्रियों को पति के आक्रामक संभोग से बचाने के लिए लाया गया था जो बालविवाह की शिकार युवावस्था तक न पहुंचने वाली विवाहिताओं के स्वास्थ्य की रक्षा की दृष्टि से केन्द्रीय धारा सभा में रखा गया था। जहां तक गांधी जी का संबंध है, वे भी धार्मिक और सामाजिक सुधारों में क्रांतिकारी कदम उठाने के विरूद्ध थें वे वर्ण व्यवस्था को जन्माधारित मानते थे।

इसके विपरीत ऋषि दयानन्द ने धर्म, समाज और राष्ट्र के हित की चिंता करते हुए शत-प्रतिशत क्रांतिकारी उपायों को अपनाने की बात कही। एक ही उदाहरण पर्याप्त है। उनका यह पक्का विचार था कि अध्यात्म और धर्म की दृष्टि से वैदिक धर्म और वेद की विचारधारा परिपूर्ण है। धर्म और दर्शन के क्षेत्रों में हमें पश्चिम से कुछ भी नहीं लेना है। तथापि विज्ञान, तकनीक, वाणिज्य व्यवसाय तथा कलाकौशल में हम अभी बहुत पीछे हैं। अत: भौतिक उन्नति और आर्थिक समृद्धि के लिए यदि हम पश्चिम के शिष्य बनें तो इसमें क्या अनुचित है? उन्होंने जहां संस्कृत और वैदिक शास्त्रों के अध्ययन पर बल दिया, वहां यथा सुविधा अंग्रेजी तथा अन्य देशों की भाषाएं सीखने के लिए प्रेरित किया। विज्ञान और कला कौशल की शिक्षा के लिए उन्होंने भारतीय छात्रों को जर्मनी भेजने के लिए प्रस्ताव रखा जो उनकी आकस्मिक मृत्यु के कारण क्रियान्वित नहीं हो सका।

वे प्रजातंत्र के प्रबल समर्थक तथा एकतन्त्री निरंकुश राजशाही के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने चाहे यूरोप में स्वीकृत प्रजातंत्रवाद के सिद्धान्तों तथा फ्रांस के विचारकों द्वारा प्रवर्तित, समानता, स्वतन्त्रता तथा बंधुत्व भावना के मंतव्यों का विधिवत अध्ययन नहीं किया था, तथापि अपनी स्वतन्त्र उद्भावना से वे परंपरागत राजशाही के विरोधी तथा प्रजातंत्रवाद के समर्थक थे। वे ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने स्वसंस्थापित आर्यसमाज में गुरुडम को अस्वीकार कर उसे प्रजातन्त्र पर स्थापित किया।

दयानन्द पश्चिम के ऋणी नहीं, जो लिया पुरातन भारत से लिया- स्वामी दयानन्द के चिन्तन की एक अन्य मौलिकता यह थी कि उनकी समस्त विचार संपत्ति अपने प्रिय देश भारत की परम्पराओं तथा यहीं की विरासत से ग्रहण की गई थी। उन्होंने मानवीयता तथा विश्वबंधुत्व का पाठ वेदों के उन मन्त्रों से पढ़ा जहां 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' तथा 'समानो मंत्र: समिति समानी समानं मन:' का उपदेश दिया गया था। नारी जागरण तथा नारी को उन्नत बनाने की उनकी शिक्षा वेदमन्त्रें तथा मनु के उस उपदेश से प्रेरित थी जहां कहा गया है-'यत्र नाय्रस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता।' उन्होंने गोरक्षा का पाठ वेदों के उन मन्त्रों से सीखा जहां गोहत्या को पाप कहा गया है तथा उसके वध का सर्वथा निषेधा किया गया है-'मा गां अनागां अदिति बधिष्ठ:' इस निरपराध तथा निष्पाप गाय की कदापि

हत्या मत करो। इसीलिए वेद में गाय को अबध्य कहा गया है।

ऋषि दयानन्द ने देशभक्ति तथा मातृभूमि से प्रेम की शिक्षा अथर्ववेद के उस भूमि सूक्त से ली जहां धरती को माता तथा हमें उसका पुत्र बताया गया है-'माता भूमि पुत्रोऽहम् पृथिव्या:।' सभी व्यक्तियों को भी वेदाध्ययन का अधिकारी बताने की बात के लिए वे यजुर्वेद के इस मन्त्र के (यथेमां वाचं कल्याणी) ऋणी हैं, जहां वेद के पठन-पाठन का अधिकार द्विजों के साथ-साथ अन्य सभी लोगों को दिया गया है। देश की स्वतन्त्रता के लिए उन्होंने जो प्रेरणादायक मन्त्र अपने सत्यार्थप्रकाशादि ग्रंथों में लिखे, उनका मूल ऋग्वेद के वे मन्त्र थे जो स्वराज्य की अर्चना का बार-बार कथन करते हैं।

स्वामी दयानन्द ने मातृभाषा, मातृभूमि तथा मातृसंस्कृति को जन-जन के लिए कल्याणकारी बताया तो उसके पीछे 'इडासरस्वती मही तिस्त्रोदेवीर्मयोमुव:' मन्त्र का चिंतन था। यदि उन्होंने दे। में शिल्प और कलाकौशल की उन्नति अभी बताई तो इसके प्रेरक वे मन्त्र थे जिनमें एक ही परिवार में विभिन्न कार्य करने वाले कामगारों तथा शिल्पियों का आत्मकथन आया है।

हम दयानन्द को पश्चिम से प्रेरणा ग्रहण करने वाला तो तब कहते यदि उन्होंने पाश्चात्य भाषा साहित्य का अध्ययन किया होता। इसके विपरीत उनके समकालीन तथा पश्चातवर्ती धर्माचार्यो तथा राष्ट्रनायकों के प्रेरणास्त्रोत पश्चिम के महापुरुष तथा पश्चित का धर्म एवं जीवन पद्धतियां रही हैं। इनका भी लेखा-जोखा सुन लीजिए। भारत के प्रथम आधुनिक पुरुष कहलाने वाले राजा राममोहन राय ने विदेशी राज्य शासन का गुणानुवाद किया तथा अंग्रेजों के शसन को दैवी वरदान घोषित किया। स्वदेश की स्वाधीनता के लिए तिलमात्र भी पुरुषार्थ न करने वाले राजा ने किसी विदेशी राष्ट्र के स्वतन्त्र होने पर घी के दिये जलाए और जहाज की यात्रा में ही सहयात्रियों को चाय-पार्टी देकर अपना हर्ष व्यक्त किया। परवर्ती ब्राह्म नेता औ स्वामी दयानन्द के मित्र तुल्य केशवचन्द्र से तो आपादमस्तक ईसाइयत से अभिभूत थे। ईसाइयत में उनकी इस आसक्ति को देखकर अनेक पादरी यह विश्वास प्रकट करने लग गए थे कि केशव बाबू शीघ्र ही ईसाइयत ग्रहण कर मसीही भेड़ों में शामिल हो जाएंगे। राममोहन राय ने यों तो वेद तथा उपनिषद् प्रतिपादित एकेश्वरवाद तथा निराकारोपासना को महत्व दिया था किन्तु वैदिक धर्म में प्रतिपादित आचार्यमूलक शिक्षाओं की तुलना में वे ईसाइयत की आचारमूलक शिक्षाओं को श्रेष्ठतर समझते थे। यह उनके उन ग्रंथो से स्पष्ट होता है जो Precepts of Chirst:Guide to Peace शीर्षक से छपे थे।

स्वामी विवेकानन्द यद्यपि भारतीय वेदांत के पक्षपाती थे तथापि उनका अधिकांश चिंतन पश्चिम पर आधारित था। वेदों का उनका अध्ययन मैक्समूलर आदि पूर्वाग्रही पश्चिमी विद्वानों के ग्रंथों पर आधारित था। तभी तो उन्होंने मैक्समूलर को मन्त्रद्रष्टा वसिष्ठ का अवतार बताया किन्तु यह जानने की चेष्टा नहीं कि उसने वेदों तथा अन्य भारतीय ग्रंथों का कितना अवमूल्यन किया है। बाद के भारतीय देशभक्त तथा राष्ट्रकर्मी तो सभी पश्चिम के मोह से ग्रस्त थे। तिलक भी वेदविषयक भ्रांत विचारों से मुक्ति नहीं पा सके और वेदों की कालगणना तथा आर्यो के आदि देश को लेकर पश्चिमी मान्यताओं के आग्रही बन गए। अरविन्द, राधाकृष्णन आदि का अध्ययन और चिंतन भी पश्चिम से अनेकश: प्रभावित रहा।

आज का इतिहासकार तो यह मानकर चलता है कि भारत में राष्ट्रवाद तथा आजादी की प्रेरणा हमारे देशवासियों को पश्चिम से मिली। इसमें आंशिक सत्यता भी है। महात्मा गांधी का सर्वोदय तथा उनके सत्याग्रह की धारणा में उन्हें into the last ग्रंथ से मिली जो जॉन रस्किन द्वारा लिया गया है। उनके कुछ विचार रूसी चिंतक लियो ताल्सताय से लिए गए हैं। जहां तक पं. नेहरू का सवाल है, वे तो स्वयं ही स्वीकार करते हैं कि उनकी शिक्षा-दीक्षा यूरोपीय ढंग से हुई है तथा उनका रहन-सहन एवं जीवन शैली मुसलमानी ढंग की है। हिन्दू तो वे आकस्मिक (by accident) ही हैं। जब राष्ट्रीय नेता हीपश्चिमी प्रभाव से नहीं बचे तो साम्यवादियों की विदेश निष्ठा के बारे में क्या कह जाए तो पदे-पदे मार्क्स, ऐंगिल्स तथा लेनिन की कसम खाते हैं।

इन सबक विपरीत दयानन्द का जीवन-चिंतन तथा कार्य आपादमस्तक स्वेदशी है। उनका विचार-संसार वेदों, उपनिषदों, वैदिक दर्शनों, रामायण, महाभारतादि आर्ष इतिहासों तथा मन्वादि आर्य स्मृतियों के तत्वों से प्रेरित है। उन्होंने जो कुछ लिया भारत से लिया। उनकी धर्मनीति, राजनीति, अर्थनीति तथा समाजनीति शतप्रतिशत भारतीय है तथा एतद्देशीय परम्पराओं से अनुमोदित है। दयानन्द के क्रांतिकारी चिंतन की यही विशेषता है।

धर्म, संस्कृति एवं स्वास्थ्य की मासिक पत्रिका

कमल ज्योति

अपने जीवन की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए 'कमल ज्योति' पत्रिका अवश्य पढ़े और इष्ट मित्रों को भी पढ़ाएं। सदस्य बनें और बनाएं।

डी-796, सरस्वती विहार,
दिल्ली-110034

क्रोध या प्रेम

- विवेक भूषण दर्शनाचार्य

क्रोध को छोड़ने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाने चाहिए।

- क्रोध को दूर करने की तीव्र इच्छा होनी चाहिए, कि 'मैं इस क्रोध से बहुत दुःखी हो चुका हूं। अब मैं इसे छोड़ ही देना चाहता हूं।
- क्रोध को छोड़ने के लिए दृढ़ संकल्प होना चाहिए, कि ''मैं पूरा परिश्रम करके क्रोध को छोड़कर श्वास लूंगा।'
- जब तक क्रोध पूरी तरह छूट न जाए, तब तक क्रोध को छोड़ने के लिए पूर्ण पुरुषार्थ करते ही रहे।
- शान्त स्वभाव के व्यक्तियों के साथ उठना-बैठना आदि व्यवहार रखें, क्रोधी स्वभाव वालों से दूर रहे।
- दूसरे लोग मेरे साथ कम से कम ऐसा-(अच्छा) व्यवहार तो अवश्य ही करें, इस प्रकार की इच्छाओं को कम करते जाएं।
- प्रतिदिन कुछ समय (2-3 घण्टे) मौन रहने का अभ्यास करें।
- जब कोई क्रोध की घटना उपस्थित होने वाली हो, तब अवश्य ही मौन हो जाएं। इसके लिए तब तक मुंह में थोड़ा पानी भर कर रख सकते हैं, जब तक वह क्रोध की घटना समाप्त न हो जाए। बाद में उस पानी को फेंक देवें।
- यदि क्रोध की घटना के समय मौन रहना सम्भव न हो और बोलना आवश्यक ही हो तो बोलने से पूर्व उसी समय यह दृढ़ संकल्प करें, कि 'बिना क्रोध किए ही बातचीत करूंगा।'
- यदि किसी घटना में बहुत अधिक क्रोध आने की सम्भावना हो और आप उसे नियन्त्रित करने में अपने आप को असमर्थ अनुभव करते हों, तो उस स्थान से हटकर दूर चले जावें।
- यदि कभी भूल से क्रोध कर बैठें हों, तो अपनी स्थिति को ठीक करने के लिए एक गिलास ठण्डा पानी पीएं।
- यदि क्रोध कर बैठें, तो उसका कुछ प्रायश्चित करें, अर्थात् उस दिन एक घण्टा विशेष रूप से मौन रहकर ईश्वर का ध्यान, प्रार्थना करें और फिर से संकल्प करें, कि 'अब क्रोध नहीं करूंगा।'
- प्रतिदिन दोनों समय (प्रातः और सायं) ईश्वर का ध्यान करें और ईश्वर से प्रार्थना करें, कि प्रभो! मुझसे यह क्रोध दूर कर दीजिए और मेरी बुद्धि को अच्छे मार्ग पर चलाइएं।'
- क्रोध करने से अगला जन्म भी अच्छा नहीं मिलता।

प्रेमपूर्वक व्यवहार से लाभ

- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से शरीर स्वस्थ रहता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से शरीर की वृद्धि होती है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से मन प्रसन्न होता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से बुद्धि का विकास होता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से परस्पर सबका सुख बढ़ता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से सभी लोग उसे चाहते हैं, प्रेम करते हैं, और उससे सम्बन्ध रखना चाहते हैं।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से मन, वाणी और शरीर पर नियन्त्रण रहता है, परिणामस्वरूप व्यक्ति अच्छे, काम, करता है और मीठी वाणी बोलता है।
- प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से अगला जन्म भी अच्छा मिलता है।

इन उपायों को लम्बे काल तक अपनाते रहने से व्यक्ति का क्रोध धीरे-धीरे कम हो जाता है और एक समय ऐसा आता है, जब क्रोध पूरी तरह छूट जाता है। आशा है, आप इन उपायों से लाभ उठाएंगें।

-दर्शन योग महाविद्यालय, आर्य वन रोजड़, पत्रा, सागरपुर, जिला-साबरकांठा, गुजरात-383307

- यदि आप व्यर्थ बातचीत तथा अपवाहों का श्रवण करना बन्द कर दें और दूसरों के मामलों में न पड़ें तो आप अनेक बाधाओं से मुक्त बने रहेंगे।
- बहस करना छोड़िए, मौन रहिए, दिल बहलाने के लिए व्यर्थ बातचीत तथा विचारों में न फंसिए, गंभीर बनिए, ईश्वर के विषय में ही चिन्तन, बातचीत कीजिए।
- जो मनुष्य स्वार्थी और कृपण है, जिसका हृदय उदार नहीं है और भजन, ध्यान सत्संग में जिसकी रूचि नहीं, उसका जीवन व्यर्थ है। यदि मनुष्य में अभिमान, कामना तथा अहंकार का लेश भी रहेगा तो ईश्वर का साक्षात्कार नहीं कर सकता।

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

'बीड़ी-सिगरेट' का धुआँ–मौत का कुआँ

-श्री सुभाषचन्द्र आर्य

1.40 लाख लोगों की मौत–क्या आप जानते हैं कि किस प्रकार सिगरेट-बीड़ी व तम्बाकू भारत की ही नहीं अपितु सारे विश्व की जनसंख्या को नाना प्रकार के भयंकर रोगों का शिकार बना रहे हैं? विश्व स्वास्थ्य संगठन (ॅभ्व्) के अनुसार भारत 'तम्बाकू महामारी' के कगार पर है। संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार "दुनिया भर में तम्बाकू से होने वाली बीमारियों के कारण हर साल 40 लाख लोग मरते हैं"। मरने वालों की यह संख्या 2-3 दशकों में 70 लाख तक बढ़ने का अनुमान है। धूम्रपान "धीरे-धीरे की गई आत्महत्या" है। यह मानव शरीर को 25 प्रकार के रोगों का शिकार बना देता है।

2. बीड़ी-सिगरेट में पाये जाने वाले विष तथा हानियाँ–

क. निकेटीन–यह विष फेफड़ों में घाव कर देता है। फेफड़े झुलस जाते हैं और अन्त में उनमें कैंसर तक पैदा हो जाता है। यह रक्तचाप को भी बढ़ाता है।

ख. कार्बन मोनोक्साइड विष–सिगरेट के धुएं में 6 प्रतिशत रहता है। इससे साँस के रोग, दमा, दिल की बीमारी और आँखों की रोशनी घट जाती है।

ग. मार्श गैस विष से शरीर की शक्ति नष्ट होकर नपुंसकता प्राप्त होती है।

घ. अमोनिया विष से जिगर बिगड़ जाता है, और हाज़मा कमज़ोर होता है।

ड. कॉलिडिन विष से सिर चकराने लगता है, नसें कमज़ोर पड़ जाती हैं।

च. पाइरीडिन विष–इससे आँतों में खुश्की तथा पेट में कब्ज़ रहता है।

छ. कार्बलिक एसिड विष–इससे अनिद्रा, स्मरण शक्ति में कमी, क्रोध तथा चिड़चिड़ापन उत्पन्न होता है।

ज. परफेरोल विष से दाँत पीले, मैले और कमज़ोर होते हैं।

झ. एज़ोलिन व सायनोज़न विष से खून ख़राब हो जाता है।

ञ. फुनफुरल व प्रुसिक एसिड विष– इनसे थकान, जकड़ता व उदासी पैदा होती है।

ट. सिगरेट-बीड़ी की हर कश में कैंसर जनक व अन्य विषाक्त पदार्थो जैसे बैजोपायरिन, टार, लेड (सीसा) की सौ करोड़ से ज्यादा कणिकाएं (एक सेंटीमीटर से दस करोड़वें हिस्से के माप की) नाक की दहलीज़ को सीधा लांघते हुए फेफड़ों में धड़ल्ले से घुस जाती हैं।

ठ. टार–निकोटीन तथा टार फेफड़ों की नालियों में बलगम पैदा करते हैं। यह बलगम फेफड़ों में खिसक जाता है और वहाँ सड़ने लगता है। धीरे-धीरे कैंसर में परिणत हो जाता है।

ड. तम्बाकू में कम से कम आठ ऐसे जहरीले तत्त्व हैं जिन्हें यदि एक खरगोश के कान में लगाया जाए तो उसे कैंसर हो जायेगा।

ढ. हाइड्रोजन सायनाइड विष भी सिगरेट के धुएं में पाया जाता है, जो अत्यन्त हानिकारक है।

3. आयु का ह्रास–एक सिगरेट से साढ़े चार पांच मिनट आयु कम हो जाती है।

4. न पीने वालों को भी नुकसान–एक बन्द कमरे में या कार में बीड़ी-सिगरेट पीने वाले व्यक्ति के साथ बैठने पर 90 प्रतिशत धुआं, धूम्रपान न करने वाले व्यक्ति के शरीर में चला जाता है। इस प्रकार वह भी नुकसान उठाता है।

धन की प्रार्थना में सावधानी

1. धन सम्पत्ति की चाह और प्रभु से प्रार्थना चाहे अपने पारिवारिक सुख के लिए हो, या परमार्थ दान-पुण्य, दीन-दुखियों की सेवा के लिए हो। दानों से आसक्ति पैदा होती है। अपने सुख के स्थान पर दूसरों को सुख देने एवं दुःख दूर करने के लिए जो धनवान बनने की इच्छा, या धन-प्राप्ति का प्रयत्न करना है, उसमें अपना बड़प्पन पहले और दान पीछे होगा, और उसमें परमार्थ से स्वार्थ अधिक अर्थात् वचन और कर्म में बड़ा अन्तर हो जाता है। क्योंकि वाणी से तो कहा कि 'प्रभो! हमें बहुत-बहुत धन दे ताकि हम बहुत-बहुत सेवा करें।' यूं समझो कि ऐसे व्यक्ति में दानवृत्ति प्रभु कृपा से विद्यमान है, और दान भी करता है, तथा स्वयं सम्पन्न भी है। परन्तु अब जब उसे प्रभु यदि एक-दो लाख उस भावना-प्रार्थना के अनुसार दे देवें, तो क्या वह समस्त समस्त एक-दो लाख प्राप्त किया हुआ, परामार्थ में लगा देगा? यदि अब भी वह पूर्वापेक्षा से अधिक या पहले की भाँति दान-पुण्य करता है, तो चाहे वह संख्या तो पहले से भी अधिक गिनी जायेगी। पर अधिक से अधिक भाग तो उसका अपना ही रहेगा, या अपने पास रखने की भावना करेगा। इसलिए स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ तो नाममात्र होगा। वेद में आज्ञा है कि ऐसी प्रार्थना की जावे। पर वह प्रार्थना केवल परमार्थ-भाव के लिए ही है।

2. इससे श्रेष्ठतर प्रार्थना करे कि 'प्रभो! हमें ऐसी बुद्धि, बल प्रदान कर कि जो कुछ भी तू हमें दे, या तुझसे हमें प्राप्त हो, उसको बाँट कर निर्वाह करें। तब हमारी उस धन में आसक्ति नहीं रहेगी। पहली प्रकार की परमार्थ- भावना में लोभ-वृत्ति बढ़ेगी, दूसरी में सन्तोष और प्रसन्नता बढ़ेगी।'

रोग नाशक-हल्दी

- डॉ. राशि याज्ञिक

प्रकृति ने धरती पर तरह-तरह के उपयोगी कंदमूल प्रदान किए है, जिनमें हल्दी का नाम सबसे ऊपर है। आमतौर पर इसका इस्तेमाल एक मसाले के रूप में दाल-सब्जियों की रंगत सुधारने के लिए किया जाता है, लेकिन इसकी महत्ता यहीं तक सीमित नहीं है। यह औषधीय गुणों की खान है।

हल्दी झिजिबेरसी परिवार का कंदमूल है। इसका वानस्पतिक नाम करक्यूमा लोगा है। यह मूल रूप से दक्षिणी तथा दक्षिण-पूर्व एशिया का कंदमूल है, लेकिन आज विश्व के तमाम देशों में इसका उपयोग किया जाता है। भारत में सदियों से ऋषि-मुनि इसका उपयोग एक औषधि के रूप में करते आए हैं तथा आयुर्वेद में इसके गुणों का काफी बखान किया गया है।

हल्दी का रंग पीला क्यों?

दरअसल यह हल्दी में मौजूद कुरकुमिन नामक जैव रसायन की वजह से होता है। इस रसायन में अनेक औषधीय तत्त्व होते हैं।

हल्दी सभी आवश्यक पोषक और रासायनिक तत्त्वों से परिपूर्ण है। इसमें प्रोटीन, विटामिन, खनिज, लवण, वसा, कार्बोहाड्रेट, रेशा आदि सभी कुछ होता है। खनिजों में कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा आदि प्रचुर मात्रा में होता है, जबकि विटामिनों में ए व बी अधिक मात्रा में होते हैं।

- हल्दी का तेल एलर्जी रोग में काफी गुणकारी माना गया है तथा इसका प्रभाव तुरंत देखने को मिलता है।
- हल्दी में कृमिनाशक गुण है। यदि पेट में कीड़े हो जाएं, तो कच्ची हल्दी का एक चम्मच रस सुबह खाली पेट लेना चाहिए। चाहें, तो इसमें चुटकीभर नमक मिला सकते हैं। यह प्रयोग एक सप्ताह तक करें। इसमें बच्चों के पेट के कीड़े मल के साथ बाहर निकल जाएंगे।
- हल्दी में पर्याप्त मात्रा में लौह तत्त्व होता है, जोकि रक्त निर्माण में मददगार होता है। अतः जिनमें रक्त की कमी हो, उन्हें रोज़ाना एक चम्मच ताज़ी हल्दी का रस बराबर मात्रा में शहद मिलाकर लेना चाहिए।
- हल्दी में विषनाशक गुण भी है, यदि कोई भी विषैला कीड़ा-मकौड़ा काट ले, तो हल्दी को घिस कर लेप तैयार कर लें उसे गरम करके लगाएं।
- नेत्र सम्बन्धी विकारों में भी हल्दी गुणकारी है। आधा कप गुलाबजल में चुटकी भर हल्दी तथा फिटकरी मिलाकर दो-दो बूँद आंखों में टपकाने से आखें का संक्रमण दूर होता है।
- इनफ्लुएंजा होने पर एक गिलास पानी में आधा चम्मच हल्दी पाऊडर तथा चौथाई चम्म्च अजवाइन चूर्ण मिलाकर सुबह-शाम सेवन करने से लाभ होता है।
- यदि दमा रोग से पीड़ित हों तो, दूध में हल्दी चूर्ण मिलाकर सुबह-शाम लेना चाहिए। कुछ ही दिनों के प्रयोग से राहत मिलने लगती है। यह प्रयोग पुरानी खाँसी तथा ब्राँकाइटिस में भी लाभदायक है।
- असावधानीवश यदि शरीर का कोई अंग जल जाए या झुलस जाए, तो हल्दी पाऊडर को पानी में घोलकर लगा देने से आराम मिलता है।
- हड्डी टूट जाने, मोच आ जाने या भीतरी चोट आने पर हल्दी का लेप करना चाहिए अथवा गरम दूध में हल्दी को मिलाकर पीना चाहिए।
- यदि पेट में कीड़े हो गए हों, तो गुड़ हल्दी मिलाकर सेवन करने से वे मर जाते हैं।
- चर्म रोग में हल्दी औषधि का काम करती हैं। इसके फूलों का पेस्ट बनाकर प्रभावित भाग पर लेप करना चाहिए।

महान व्यक्तियों की सोच

एक बार महावीर स्वामी वन में घोर तपस्या कर रहे थे। आसपास पशु चरा रहे ग्वाले उन्हें समाधि में लीन देखकर उनकी हंसी उड़ाया करते। किन्तु उन्होंने ग्वालों के व्यवधान पर कभी ध्यान नहीं दिया। तपस्या के विघ्न की बात स्वामी जी के श्रद्धालुओं के पास भी पहुंची। वे लोग महावीर के पास गये और उनसे विनती करने लगे- महाराज, आपका आदेश हो तो हम लोग एक भवन का निर्माण करा दें और वहां आपकी सुरक्षा की व्यवस्था कर दें, जिससे आपकी साधना सतत चल सके। महावीर स्वामी बोले-बन्धु, ऐसा न कहें। बच्चे प्यार से भी तो मुंह नोचने लगते हैं। तो क्या इसी बात से माता-पिता उन्हें गोद में लेना बंद कर दें। रही निर्माण की बात, तो आपका धन जरूरतमन्द लोगों की सहायता हेतु काम आना चाहिए। सभी श्रद्धालु एक साथ 'धन्य-धन्य' कह उठे। ग्वालों ने जब यह बात सुनी तो वे भी महावीर स्वामी के चरणों में नतमस्तक हो गये।

प्रस्तुति : अनु मिश्रा, बदायूं

वार्षिकोत्सव

वैदिक सत्संग मण्डल का वार्षिकोत्सव 25 अक्टूबर 2015 को आलोक भारती पब्लिक स्कूल के प्रागंण में सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध समाजसेवी एवं नेतागण पधारे। श्री विनय आर्य मन्त्री, आर्य प्रादेशिक सभा दिल्ली ने आर्य समाज की आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त किये।

इनके अतिरिक्त उत्तरी वेद प्रचार मण्डल के पदाधिकारी गण-श्री जोगेन्द्र खट्टर, श्री सुरेन्द्र गुप्ता, श्री सुरिन्द्र चौधरी एवं श्री व्रतपाल भगत जी पधारे। इस वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में दिनांक 24.11.2015 को शोभा यात्रा भी निकाली गई।

मारीशस के राष्ट्रपति से आचार्य चन्दशेखर शास्त्री की भेंट

प्रख्यात वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने मारीशस के राष्ट्रपति से भेंट के दौरान उन्हें अपना साहित्य भेंट करते हुए महर्षि दयानन्द की उस सद इच्छा की चर्चा की जिसके अनुसार उन्होंने महिलाओं को समान अधिकार, शिक्षा और ज्ञान देने पर बल दिया था। राष्ट्रपति भवन में महामहिम अमीना गरीब फकीम से शिष्टाचार भेंट के दौरान अध्यात्म पथ के संपादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने राष्ट्रपति महोदया की आयुर्वेद पर किये गये उल्लेखनीय कार्यो की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उनके और मॉरीशस वासियों के सुखद जीवन की कामना की।

कमला जी, शत शत वन्दन

घर आंगन को सुरमित करता, जीवन पुष्प तुम्हारा
स्मृति दीपक जब जल उठता है, हो जाता उजियारा
यह मुस्कान तुम्हारी मनहर, नई प्रेरणा पाते
फिर मीठी-मीठी यादों में, हम सब हैं खो जाते
अभिवादन अभिनन्दन,
कमला जी, शत शत वन्दन॥
आंधी में दीपक जलते हैं, यह तुम ने सिखलाया
विष पीकर भी अमृत बांटा, जीवन यज्ञ बनाया
कण्टक पथ पर सुमन खिलाना, फिर हंसना मुस्काना
कटुता तज कर कैसे जीना, हम ने तुम से जाना
अभिवादन अभिनन्दन,
कमला जी, शत शत वन्दन॥

- ओम प्रकाश ठाकुर

शोक समाचार

1. श्री राधेश्याम टूटेजा का गत दिनों दिनांक 17 अक्टूबर 2015 को निधन हो गया। वह पिछले काफी समय से बीमार थे।

2. श्री हरीश बत्रा जी पूर्व मन्त्री केन्द्रीय सभा दिल्ली एवं चेयरमैन नाईट क्वीन की माता जी श्रीमती सुशीला देवी का दिनांक 9 अक्टूबर 2015 को निधन हो गया।

कमल ज्योति परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

सबसे प्रेम करो और बहुत कम पर भरोसां परन्तु किसी के साथ बुराई न करो।

(शेक्सपियर)

पाठकों से निवेदन

यदि आपका 'कमल ज्योति' हेतु शुल्क अभी तक जमा नहीं हुआ है या समाप्त हो गया है तो कृपया अपना शुल्क आजीवन 1100/- रुपये की दर से 'कमल ज्योति' के नाम मनिआर्डर/क्रास चैक से कार्यालय, डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 के पते पर शीघ्र भेजें ताकि पत्रिका आपको लगातार मिलती रहे। अपना नाम, निवास का पूरा पता, कोड नम्बर, फ़ोन तथा मोबाईल नम्बर आदि सुन्दर व साफ़ शब्दों में लिखने का कष्ट करें। धन्यवाद! **-प्रबन्धक**

RNI No.DEL BIL/2008/25452 Total Pages 12 ओ३म् Posting Date 5 or 6 Dec. 2015 DL (N)0225/2015-17

प्रेषक Date of Publication: 25 Nov.2015

कमल ज्योति

दिसम्बर 2015 (मासिक) एक प्रति का मूल्य 10 रुपये

डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034,

फोन : 27017780

सेवा में ...ident / Se... 'hi Arya ' ..., Hanum... ... Delhi – 1...

त्यागमयी, ममतामयी माता कमला आर्या

श्रीमती कमला आर्या जी के 76 वें जन्मदिवस

(3 दिसम्बर 2015) पर श्रद्धा सुमन

हम सब की प्रेरणास्रोत, कर्त्तव्य पारायणा, दया, ममता, आदर्श एवं परोपकार की साक्षात् प्रतिमूर्ति, समाजसेवा व रचनात्मक कार्यों में सदैव प्रोत्साहन देने वालीं माता कमला आर्या जी को शत्-शत् नमन।

(माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट के सभी सदस्य एवं 'कमल ज्योति' परिवार)

स्वामी-माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट (रजि.) के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक एल.आर. आहूजा, चलभाष : 9810454677 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली-5, दूरभाष : 41548504 मो. 9810580474 से मुद्रित। कार्यालय : डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 से प्रकाशित